Part II Hons
P. III (A)

दक्षिण पूर्व एशिया में बौद्धधर्म पर प्रकाश डालें

Question - 3. Buddhism in South-east Asia

Answer — दक्षिण पूर्वी एशिया के विभिन्न प्रदेशों में पौराणिक हिन्दू धर्म के समान बौद्ध धर्म का भी प्रसार पूर्णरूपेण प्रचलित था। जिसका प्रमाण उन क्षेत्रों से उपलब्ध पुरातात्विक सामग्रियों एवं चीनी साहित्य से होता है।

जावा में पूर्वी सदी के प्रारम्भ में बौद्ध धर्म प्रचलित था। इसका विवरण फाहियान के वर्णन से मिलता है। गुणवर्मा ने यहाँ बौद्ध धर्म के प्रचार का सूत्रपात किया। यद्यपि गुणवर्मा के प्रभाव से जावा की राजमाता तथा राजा ने बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया था। पर अभी वह जावा का प्रधान धर्म नहीं बना था। पौराणिक हिन्दू धर्म वहाँ फलता-फूलता रहा, यद्यपि उनके साथ-साथ बौद्ध धर्म का भी वहाँ प्रचार होता रहा। शुरू में जावा तथा उसके समीपवर्ती द्वीपों में बौद्धों के हिनयान सम्प्रदाय के सर्वास्तिवादी निकाय का प्रचार हुआ था। पर आठवीं सदी में वहाँ महायान सम्प्रदाय का प्रवेश हुआ और उसने शीघ्र ही वहाँ से हिनयान का उच्छेद कर दिया। अब इन द्वीपों में पौराणिक हिन्दू धर्म और महायानी बौद्ध धर्म साथ-साथ कायम रहे और उनके विद्रोह या विद्वेष के कोई भी संकेत वहाँ नहीं मिलते। शैलेन्द्र राजा बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। लिगोर (मलाया) के एक अभिलेख के अनुसार श्री विजय के राजा के आदेश से राजस्थविर (राजगुरु) जयन्त ने तीन बौद्ध चैत्यों का निर्माण कराया था। शैलेन्द्र राजा श्री बालपुत्रदेव ने नालंदा (भारत) में भी एक विहार बनवाया। आठवीं शदी में जावा पर शैलेन्द्र राजाओं का प्रभुत्व स्थापित हो गया था, क्योंकि ये राजा बौद्ध थे, अतः इनके शासन काल में जावा में भी इस धर्म

का उत्कर्ष हुआ और प्रतापी शैलेन्द्र सम्राटों के संरक्षण में इस धर्म ने वहां प्रमुख स्थान प्राप्त किया। आठवीं और नवीं शताब्दी में जावा में अनेक विशाल बौद्ध मंदिरों एवं चैत्यों का निर्माण हुआ जिनमें बरोबुदूर का चैत्य सबसे अधिक महत्व का है। उसके अतिरिक्त चण्डी कालसन, चण्डी सरी और चंडीसेवू आदि के मंदिर भी इसी काल में बने।

शैलेन्द्र राजाओं की राजधानी श्री विजय थी। यह नगरी बौद्ध की महत्वपूर्ण केन्द्र थी और चीन के बौद्ध भारत आते हुए और भारत के बौद्ध चीन जाते हुए प्राय: वहां ठहरा करते थे।

दक्षिण पूर्वी एशिया में बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय का ही मुख्य रूप से प्रचार हुआ था। इस सम्प्रदाय में बहुत से देवी देवताओं की पूजा की जाती थी। ये देवी देवता प्राय: उसी प्रकार के थे जैसे पौराणिक हिन्दू धर्म में थे। महायान में आदि बुद्ध के अतिरिक्त ध्यानी बुद्धों की पूजा की जाती थी जिनके नाम वैरोचन, अक्षोभ्य, रत्नसम्भव, अमिताभ और अमोघसिद्ध थे। बुद्ध पद को प्राप्त करने के लिए यत्न तथा साधना में तत्पर व्यक्तियों को इस सम्प्रदाय में बोधिसत्व कहा जाता था। अवलोकितेश्वर, मंजुश्री, वज्रपाणि, मैत्रेय, आकाशगर्भ आदि मुख्य बोधिसत्व थे। जिनकी देवताओं के समान पूजा की जाती थी। बोधिसत्व रूपी देवताओं के समान अनेक देवियों ने भी महायान मत में स्थान प्राप्त कर लिया था। जिनमें तारा, प्रज्ञापारमिता और श्री महादेवी प्रधान थी। जावा सुमात्रा में आदि में इसी महायान मत का प्रचार हुआ था अत: वहां के देव देवी देवता को

की भी अनेक मूर्तियाँ उपलब्ध हुई है। आठवी सदी से भारत के महायान में एक अन्य सम्प्रदाय का विकास शुरू हो गया था जिसे वज्रयान कहते है। इसमें गुह्यसिद्धियों पर विश्वास किया जाता था और पूजा के लिए तांत्रिक साधनों का उपयोग होता था। भारत के साथ-साथ जावा आदि के महायान में भी वज्रयानी सिद्धान्तों का प्रवेश हुआ और सामान्य में वहां बौद्ध धर्म का प्रधानरूप नहीं रह गया जिसका प्रतिपादन वज्रयान द्वारा किया जाता था इस सम्प्रदाय में तांत्रिक साधना के लिए पंचमकारों मद्य, मांस, मीन, मुद्रा, मैथुन का प्रयोग आवश्यक था और साथ ही मंत्र शक्ति का प्रयोग का अनेक विविध तांत्रिक अनुष्ठान भी किये जाते थे।

कम्बुज में बौद्ध धर्म की सत्ता का सबसे पुराना प्रमाण प्रसतत कम अभिलेख (७९१) ई० है जिसमें कि लोकेश्वर की प्रतिमा का उल्लेख किया गया है। यह अभिलेख इस प्रकार है —

समगुणशशिनगशाके
प्रथितो यस्तु प्रतिष्ठितो भगवान
जगदीश्वर इति नाम्ना स जयति लोकेश्वर प्रथम:

आठवीं शदी में महायान सम्प्रदाय का कम्बुज देश में प्रवेश हो चुका था और वहां बोधिसत्वों की मुर्त्तियां भी स्थापित कि जाने लगी थी। यह इस अभिलेख से सूचित होता है कि पर बौद्ध भिक्षु इससे पहले भी कम्बुज में विद्यमान थे इस बात का संकेत जयवर्मा प्रथम के वतप्रेई-वार शिलालेख में मिलता है। इसका काल ६६४ ई० है।

प्रसत त कम अभिलेख ७९१ ई० के पश्चात एक सदी के लगभग तक कम्बुज देश

में कोई ऐसा अभिलेख नहीं मिलता जिसमें कि बौद्ध धर्म का उल्लेख हो। इस काल में वहां पौराणिक हिन्दूधर्म का विशेषरूप से उत्कर्ष हुआ। यद्यपि बौद्ध लोग भी अपने धर्म के प्रचार में तत्पर रहे। वोकसम्रो के अभिलेख से यह स्पष्ट रूप से सूचित होता है कि १० वीं सदी के अंत में कम्बुजदेश में बौद्ध धर्म भली भांति स्थापित हो गया था। राजेन्द्रवर्मा के समय के प्रेरूप अभिलेख में योगाचार का उल्लेख आया है जो बौद्ध धर्म का अन्यतम सम्प्रदाय था। ९८१ ई० के एक अभिलेख (फनोम वन्ते जन अभिलेख) का प्रारम्भ बुद्ध प्रज्ञापारमिता लोकेश्वर, वज्री, मैत्रेय और इन्द्र की स्तुति के साथ किया गया है और बाद में यह उल्लेख है कि आचार्य-त्रिभुवन वज्र ने बुद्ध की माता की एक प्रतिमा प्रतिष्ठापित की थी।

ग्यारहवीं शदी में कम्बुज देश में बौद्ध धर्म का प्रचार तथा प्रभाव में वृद्धि हो गयी थी। सम्भवतः सूर्यवर्मा प्रथम पहला कम्बुज नरेश था जिसने कि बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया था यद्यपि अपने देश की परम्परा का अनुसरण करते हुए वह पौराणिक देवी-देवताओं के प्रति भी आस्था रखता था। मृत्यु के पश्चात सूर्यवर्मा को निर्वाणपद का विरुद प्रदान किया गया था इस सब बातों से पता चलता है कि सूर्यवर्मा ने बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया था और उसके काल में बौद्ध धर्म उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रहा था।

निर्वाणपद: बिरुदप्रदान

∴ कम्बुज के बौद्ध राजाओं में जयवर्मा सप्तम का स्थान सर्वोपरि है। इस राजा के अनेक अभिलेखों के प्रारम्भ में बुद्ध की स्तुति की गयी है। सैढ़िंग अभिलेख का प्रारम्भ

ही 'नमोकुद्धाय' से हुआ है और उसमें बुद्ध को भैषज्यगुरु भी कहा गया है। फिमानक अभिलेख में सर्ववेत्ता शाक्येश्वर बुद्ध की स्तुति के साथ त्रिकाय और लोकेश्वर की भी वन्दना की गयी है। इस राजा ने प्रज्ञापारमिता के रूप में अपनी माता की मूर्ति का निर्माण कराया था और इस मूर्ति को प्रतिष्ठापित कर मंदिर का खर्च चलाने के लिए राजविहार नामक नगर को दान में दे दिया था। जयवर्मासप्तम की रानी इन्द्रदेवी बौद्ध धर्म में अगाध आस्था रखती थी और बौद्ध धर्म के ग्रंथों का उसने गम्भीरता के साथ अध्ययन किया था। नागेन्द्रतुंग, तिलकोत्तर और नरेन्द्राश्रम नामक बौद्ध विहारों में उसने बौद्ध भिक्षुणियों को बुद्ध धर्म की शिक्षा दी थी। इन्द्रदेवी ने अपनी छोटी बहन जयराजा देवी को भी बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था। भारत के अशोक के समान जयवर्मासप्तम ने भी जनता के हित व कल्याण के लिए बहुत से महत्वपूर्ण कार्य किये थे। कम्बुज देश में बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय का ही विशेष रूप से प्रचार हुआ था। पर बाद में हिनयान सम्प्रदाय का भी वहां प्रवेश हुआ। श्रीलंका में हिनयान का प्रचार था। और सम्भवतः वहीं से यह सम्प्रदाय समुद्रमार्ग द्वारा कम्बुज में प्रविष्ट हुआ था।

चम्पा में प्रधानतया पौराणिक हिन्दू धर्म का प्रचार था पर उसके साथ-साथ बौद्ध धर्म की भी वहां सत्ता थी सम्भवतः युग में चम्पा में बौद्ध धर्म ही अधिक प्रचलित था। सातवीं शदी के युग में जब चीन के एक सेनापति 'लिउ फंग' ने चम्पा पर आक्रमण किया था तो वहां से जो लूट वह अपने देश

ले गया था, उसमें 1350 बौद्धग्रंथ भी थे। प्रसिद्ध चीनी यात्री इत्सिंग सातवीं सदी के उत्तरार्द्ध में चम्पा आया था उसने लिखा है कि इस देश में बहुसंख्यक बौद्ध-आर्यसम्मितीय निकाय के है। और कुछ सर्वास्तिवाद निकाय के। 829 ई० में सांगत नामक एक व्यक्ति ने जिन (बुद्ध) और शंकर दोनों की मूर्तियों को प्रतिष्ठापित किया था ये सब तथ्य यह प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है कि सातवीं सदी से पूर्व ही चम्पा में बौद्ध धर्म का पर्याप्त प्रचार हो चुका था और वह शैव तथा वैष्णव धर्मो के साथ वहाँ फलता फूलता रहा। दोंग-दुओंग चम्पा में बौद्ध धर्म का प्रधान केन्द्र था वहाँ बुद्ध तथा बोधिसत्वों इत्यादि की मूर्तियाँ भी अच्छी एंव बड़ी संख्या में उपलब्ध हुई है।

चम्पा के अभिलेखों में बुद्ध के लिए जिन लोकेश्वर, सुगत, अमपद, शाक्यमुनि, आदि विभिन्न नामों का प्रयोग किया गया है। राजा इन्द्रवर्मा ने 875 ई० में लक्ष्मीन्द्र लोकेश्वर की मूर्ति प्रतिष्ठापित की थी। और भिक्षु संघ के लिए एक विहार का भी निर्माण किया था। मृत्यु के पश्चात इस राजा को परम बुद्ध लोक नाम दिया गया। जिससे सूचित होता है कि इसने बुद्ध धर्म को अपना लिया था पर• जयइन्द्रवर्मा ने भी महाशिवलिंग के लिए भी दासों सहित कृषि योग्य भूमि को दान में दिया था। वस्तुतः बौद्ध और हिन्दू धर्म चम्पा में साथ-साथ फल-फूल रहे थे और वहाँ के राजा भी दोनों धर्मो के मंदिरों का निर्माण कराकर तथा दोनों को धन सम्पति दान कर उसके प्रति अपनी श्रद्धा भावना प्रकट किया करते थे। 902 ई० में स्थविर नागपुष्प ने प्रमुदित लोकेश्वर विहार का निर्माण कराया था। दसवीं सदी के आरम्भ में चम्पा में महायान सम्प्रदाय

ही नहीं अपितु वज्रयान का भी प्रचार हो चुका था। बुद्ध के अतिरिक्त अवलोकितेश्वर बोधिसत्व तथा ~~प्रज्ञा~~ प्रज्ञापारमिता आदि की बौद्ध मूर्तियां भी चम्पा से मिली है बुद्ध की कुछ मूर्तियों पर धर्मचक्र परिवर्तन, बुद्ध की अभयमुद्रा आदि भी अंकित है। चम्पा में कोई बौद्ध स्तूप या उसके भग्नावशेष अबतक नहीं मिले हैं। यद्यपि मिट्टी के कतिपय खिलौनों पर स्तूप के चित्र अंकित हैं।

प्राचीन काल में बर्मा में पौराणिक हिन्दू धर्मों का भी प्रचार रह चुका है। पर वर्तमान समय में वहां के निवासी बौद्ध धर्म के अनुयायी है। महावंश में उल्लिखित अनुश्रुति के अनुसार राजा अशोक के समय में सोण और उत्तर नामक स्थविर सुवर्ण भूमि में धर्मप्रचार के लिए गये थे वहां एक राक्षसी थी जो समुद्र से निकलकर राजमहल में उत्पन्न होने वाली बच्चों को खा जाती थी। जब सोना एवं उत्तरा सुवर्ण भूमि में पहुंचे तभी राजमहल में एक बच्चा पैदा हुआ। स्थविरों को देखकर लोगों ने समझा ये भी राक्षसी के साथी हैं। वे शस्त्र लेकर उन्हें मारने के लिए आगे बढ़े। इसपर स्थविरों ने उनको अपना परिचय दिया। स्थविरों ने राक्षसी को भगाने में सफलता पायी। स्थविरों ने उस समागम में ब्रह्मजाल सुत का उपदेश दिया। उसे सुनकर साठ हजार लोगों के धर्म चक्षु खुल गये साढ़े तीन हजार कुमारों और 1½ हजार कुमारियों ने प्रव्रज्या ग्रहण की। स्थविर उत्तरा और सोण ने सुवर्ण भूमि के किस प्रदेश में जाकर वहां के हजारों निवासियों को बुद्ध धर्म का अनुयायी बनाया यह निर्धारित कर सकना कठिन है पर सुवर्ण भूमि का पश्चिमी अपरान्त बर्मा ही था। ग्यारहवीं सदी में बरमा का राजा अनिरुद्ध था। बरमा लोग भी इस समय तक बौद्ध धर्म को अपना चुके थे

पर उनके बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय का प्रचार हुआ था और यह महायान भी वज्रयान से मिश्रित था।

बरमा के इतिहास में राजा अनिरुद्ध का स्थान अत्यन्त महत्व का है। उसके समय में वहाँ के हिनयान का बहुत उत्कर्ष हुआ और बौद्ध धर्म की जिस उन्नति का सूत्रपात हुआ वह अबतक भी जारी है बरमा में बौद्ध धर्म का प्रचार प्रधान स्थान है और उसके माध्यम से भारतीय संस्कृति का प्रभाव वहाँ विद्यमान है। वहाँ के बौद्ध पाली भाषा के त्रिपिटिक का अध्ययन करते थे। जो भारत की ही भाषा है

स्याम में भी असंख्य बौद्ध मुर्तियाँ प्राप्त हुयी हैं जिससे यह पता चलता है कि वहाँ प्राचीन समय से ही बौद्ध धर्म का बोल-बाला रहा है। वहाँ बौद्ध से सम्बन्ध रखने वाली कुछ मुर्तियाँ मिली हैं जिनका धर्मचक्र और हिरणी अंकित है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि दक्षिण पूर्व एशिया के विभिन्न देशों में बौद्ध धर्म काफी विकसित हुआ

मौर्य काल (उदाहरण, अशोक) में बौद्ध धर्म दक्षिण, पूर्वी एशिया के विभिन्न भागों में फैला। (हाशिये पर टिप्पणी, आंशिक रूप से अपठनीय)